दुख रे प्यारो मेरे प्रान को

दुख रे प्यारो मेरे प्रान को।
सो में छोड़यो क्यों कर जाए, जो मैं लियो है बुलाए।टेक।।
इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे।
दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए।।
जिन सुख पिउजी ना मिले, सो सुख देऊं रे जलाए।
जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए।।
दुख तो हमारो आहार है, औरन को दुख खाए।
दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साध निबाहे।।
इन सुपने के दुख से जिन डरो, दुख बदले सत सुख।
अपने मासूक सों नेहड़ा, तोको देयगो बनाए के दुख।।
ता सुख को कहा कीजिए, जो देखलावे धरम राए।
मैं वह दुख मांगो पिउपें, पिउ सो पल पल रंग चढ़ाए।।
दुख सब सुपनों हो गयो, अखण्ड सुख भोर भयो।
महामत खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत कह्यो।।